ॐ

~~~~~~~~~~~~

विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

कक्षा- नवम् विषय- हिंदी

दिनांक- 21/05/ 2020 क्षितिज- काव्य- खंड

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया 卐

शुभ प्रभात बच्चों! आपका दिन मंगलमय ,सुखमय हर तरह से उमंगो भरा हो!

जीवन में कभी सम तो कभी विषम परिस्थितियों से सामना करना ही पड़ता है । कभी भी हमारे अनुकूल कोई भी कार्य नहीं होता है परंतु उन प्रतिकूल अवस्थाओं में भी हम अपने आप को संयमित रखते हुए जीवन में आगे बढ़ते रहते हैं।
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

प्यारे बच्चे, हम देख रहे हैं कि किस तरह से रसखान कवि ने अपने हृदय के भावों को व्यक्त किया है! कृष्ण के प्रति अपने अपार प्रेम को, अगाध प्रेम को हमारे समक्ष सरस और सरल भाषा में प्रदर्शित किया है। सवैया में हम लोग आज चौथा एवं अंतिम पद पढेंगे।

4

कानन्हि अँगुरी रहिबो जबहीं मुरली धुनि मंद बजैहै ।

मोहनी तानन सों रसखानि अटा चढ़ि गोधन गैहै तौ गैहै।।

टेरि कहौं सिगरे ब्रजलोगनि काल्हि कोऊ कितनो समुझैहै ।

माई री वा मुख की मुस्कानि सम्हारी न जैहै,न जैहै,न जैहै।।

प्रसंग- प्रस्तुत सवैया पाठ्य पुस्तक 'क्षितिज, में संकलित रसखान के सवैया से उद्धृत है

श्री कृष्ण की मुस्कान की मादकता इतनी मोहक एवं तीव्र है कि कि उसमें पूरा संसार समाहित हो जाता है और इस मादक सौंदर्य से कोई भी बच नहीं पाता है श्री कृष्ण के अनुपम सौंदर्य की मादकता के प्रभाव को गोपियों के द्वारा कवि ने यहां वर्णित किया है।

भावार्थ :- कवि रसखान ने अपने इन पंक्तियों में गोपियों के मन में कृष्ण के प्रति आपार प्रेम को दर्शया है। वो चाहकर भी कृष्ण को अपने दिलो दिमाग से निकल नहीं सकती। इसीलिए वे कह रही है की जब कृष्ण अपनी मुरली बजाएंगे तो वो उनसे निकलने वाली मधुर ध्वनि को नहीं सुनेंगी। वे अपने कानो में हाथ रख लेंगी। फिर चाहे कृष्ण किसी महल के ऊपर चढ़ कर अपनी मुरली से मधुर ध्वनि क्यों न बजाये और गीत ही क्यों न गाये मैं जब तक उन्हें नहीं सुनुँगी तब तक मुझ पर उनका कोई असर नहीं होने वाला। लेकिन अगर गलती से भी उसकी मधुर ध्वनि मेरे कानो में चली गई तो फिर गांव वालो मैं अपने बस में नहीं रह सकती। मुझसे फिर चाहे कोई कितना भी समझाए मैं समझने वाली नहीं हूँ। गोपियों के अनुसार कृष्ण के मुख में मुस्कान इतनी ही प्यारी लगती है की उससे देख कर कोई भी उसके बस में आये बिना नही रह सकता। और इसी कारन वश गोपियाँ कह रही हैं की उनसे श्री कृष्ण का मोहक मुख देख कर संभाला नहीं जायेगा।

यहाँ पर गोपियाँ कृष्ण को रिझाने की कोशिश कर रही हैं। वे कहती हैं कि जब कृष्ण की मुरली की मधुर धुन बजेगी तो उसमें मगन होकर हो सकता है गायें भी अटारी पर चढ़कर गाने लगें, लेकिन गोपियाँ अपने कानों पर उंगली रख लेंगी ताकि उन्हें वो मधुर संगीत ना सुनाई पड़े। लेकिन गोपियों को ये भी डर है और ब्रजवासी भी कह रहे हैं कि जब कृष्ण की मुरली बजेगी तो उसकी टेर सुनकर गोपियों के मुख की मुसकान सम्हाले नहीं सम्हलेगी। उस मुसकान से पता चल जाएगा कि वे कृष्ण के प्रेम में कितनी डूबी हुई हैं।

विशिष्ट तथ्य

- यहां कृष्ण की मुरली धुन और उनकी मुस्कान का अचूक प्रभाव बताने के साथ-साथ गोपियों की विवशता का सजीव चित्रण किया है।
- न 'जैहै' की आवृत्ति से अपनी विवशता को स्पष्ट किया है।

- ‘गोधन गहै’, ‘काल्हि कोऊ कितनो’ में अनुप्रास अलंकार है ।
- कठिन शब्दार्थ

  अटा-कोठा टेरि- पुकारकर बुलाना

  स्वांग -नाटक

  गोधन -गाय

  आज के लिए इतना ही ।

  मुस्कुराहट एक ऐसी चीज है जो कठिन -से -कठिन परिस्थितियों को भी हमसे दूर कर देती है। यानी सकारात्मकता को जीवित रखती है और नकारात्मकता को हम से कोसों दूर भगा देती है अतः

  😊मुस्कुराते रहिए मुस्कुरा कर आने वाले पलों का स्वागत कीजिए 😍

  धन्यवाद

  कुमारी पिंकी “कुसुम”